ज्ञान की राजनीति पुस्तकमाला – 2

लोगों के हित की राजनीति
और
ज्ञान का सवाल

विद्या आश्रम

सारनाथ, वाराणसी–221007

पुस्तक का नाम : **लोगों के हित की राजनीति और ज्ञान का सवाल**

वर्ष : 2008

सहयोग राशि : रू. 10/–

सम्पादन एवं प्रकाशन : डा. चित्रा सहस्रबुद्धे द्वारा विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी की ओर से

अक्षर संयोजन : एफिशिएन्ट प्रिन्टर्स, कचहरी, वाराणसी

मुद्रक : सतनाम प्रिन्टर्स, पाण्डेयपुर, वाराणसी

सम्पर्क : विद्या आश्रम, सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007

फोन : 0542–2595120

वेब साइट : vidyaashram.org

विषय प्रवेश

औद्योगिक क्रांति से मनुष्य की वैचारिक और व्यावहारिक गतिविधियों का केन्द्र 'उत्पादन' रहा और उत्पादन के साधन, मालिकाना, नियंत्रण, प्रबन्धन, केन्द्रीकृत/विकेन्द्रित उत्पादन आदि इस युग में बहस के मुद्दे रहे। जहाँ एक तरफ पूँजीवादी शक्तियों ने इन मुद्दों को अपने पक्ष में स्थापित किया वहीं इन्हीं मुद्दों ने इस युग की बुनियादी राजनीति यानि लोगों के हित की राजनीति के लिये रास्ते भी खोले। सूचना युग में वही स्थिति 'ज्ञान' की है। आज 'ज्ञान' केन्द्र में है और इसके विभिन्न पक्षों पर बहस को खोले बिना आज की बुनियादी राजनीति का रास्ता खुलता नही है।

आज 'ज्ञान' शब्द का इस्तेमाल सब जगह हो रहा है– ज्ञान–समाज, ज्ञान–श्रम, ज्ञान–प्रबन्धन, ज्ञान–उत्पाद, ज्ञान–आर्थिकी, ज्ञान–केन्द्र, ज्ञान–सहयोग आदि। अब ज्ञान–गतिविधि का एक नया ही स्थान अस्तित्व में आया है जिसे इन्टरनेट कहते हैं। इन्टरनेट आने के बाद से ही सारी बातों के केन्द्र में 'उत्पादन' नहीं बल्कि 'ज्ञान' आ गया है।

यह पुस्तिका उन सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिये लिखी गई है जो सूचना युग में हो रहे बदलावों पर नज़र रखना चाहते हैं और उस विचार को गढ़ने का उत्साह रखते हैं जिसके बल पर आज बुनियादी राजनीति खड़ी होगी। इस पुस्तिका में निम्नलिखित अध्यायों के तहत विषय को संगठित किया गया है।

1. परिवर्तन
2. लोगों के जीवन पर बदलाव के प्रभाव
3. जन–प्रतिरोध
4. जन–प्रतिरोधों का ज्ञानगत आधार
5. लोकविद्या और सामान्य जीवन
6. मुक्ति की लड़ाई

ज्ञान की राजनीति

सन् 1990 से पूरी दुनिया में एक परिवर्तन का दौर चल रहा है। सूचना उद्योग का विकास, निजीकरण, बाजार, मीडिया और मनोरंजन, जैविक खेती, शहरों का पुनर्संगठन, वैश्वीकरण, अमेरिका की दादागिरी इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जिनके मार्फत इस परिवर्तन को समझा जा सकता है।

सूचना उद्योग ने ज्ञान की नई परिभाषा दी है और यह कहा जा रहा है कि इस परिवर्तन के मार्फत एक ज्ञान आधारित समाज बन रहा है। विज्ञान की सिरमौर स्थिति टूट गई है। इंटरनेट का बोलबाला बढ़ा है। इससे सार्वजनिक क्षेत्र में लोकविद्या को फिर से पहचान मिली है।

ज्ञान और विकास की बातें कारीगरों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं, मध्यम वर्गों, छोटा–छोटा धन्धा करने वालों और आदिवासियों के लिये भुलावा साबित हो रही है। ये सब लोग पुख्ता ज्ञान और कौशल रखते हैं। लेकिन एक तरफ इस ज्ञान पर कम्प्यूटर–इंटरनेट द्वारा कब्ज़ा किया जा रहा है और दूसरी ओर इस ज्ञान के आधार पर उत्पादित वस्तुओं को बाजार में दाम नहीं मिलता। इस तरह गरीब किंतु ज्ञानी समाज के ज्ञान पर कब्जा किया जा रहा है और उसका शोषण हो रहा है। लोकविद्या, साइंस और इंटरनेट सभी के ज्ञान पर नये उद्योगपतियों और वित्तीय पूँजी के मालिकों का कब्जा है।

सभी राजनीतिक पार्टियाँ उसी विकास के आदर्श को मानती हैं जिसमें गरीबी दूर करने का कोई रास्ता नही है उल्टे जो गरीबों के शोषण पर ही आधारित होता है। ज़रूरत एक ऐसे परिवर्तन की राजनीति की है जो गरीबों के हितों को सर्वोपरि रखे। यह तभी संभव है जब एक नई परिवर्तन की राजनीति खड़ी हो। यह ज्ञान की राजनीति होगी।

ज्ञान की राजनीति के विचार को सबके सामने रखने के लिये और उस पर सार्वजनिक बहस छेड़ने के लिये चार पुस्तकों की यह पुस्तक–माला बनाई गई है। ये पुस्तकें हैं–

1. **बौद्धिक सत्याग्रह**
2. **लोगों के हित की राजनीति और ज्ञान का सवाल**
3. **ज्ञान मुक्ति आवाहन**
4. **युवा ज्ञान शिविर**

ज्ञान मुक्ति दर्शन

ज्ञान मुक्ति दर्शन के कुछ मूल्य निम्नलिखित हैं–

1. ज्ञान उद्योग नही है।
2. ज्ञान मुनाफा कमाने के लिये नही है।
3. ज्ञान किसी की निजी सम्पत्ति नही है।
4. ज्ञान शोषण का साधन नही है।
5. ज्ञान का शोषण मानवता के प्रति अपराध है।
6. ज्ञान मनुष्य और समाज के पुनर्निर्माण का साधन है।
7. ज्ञान समाजहित की धरोहर है।
8. ज्ञान मनुष्य की जीविका का साधन है।
9. ज्ञान मनुष्य और समाज की शक्ति और मुक्ति का स्रोत है।
10. ज्ञान की सभी धारायें बराबर के सम्मान की हकदार हैं।

•

लोकविद्या और सामाजिक परिवर्तन

मनुष्य का जीवन निर्धारित करने में विद्या की भूमिका शायद हमेशा ही सबसे अधिक रही है, धर्म और राज्य से भी अधिक। विद्या में मनुष्य का आधार होता है, उसकी पहचान होती है। विद्या ही मनुष्य को मुक्ति का मार्ग देती है और इसी के जरिये वह अपनी जीविका भी चलाता है। समाज की गति, लोगों के आपसी सम्बन्ध और उनमें बदलाव के आधार भी मनुष्य की विद्या में होते हैं। अन्याय के खिलाफ संघर्ष और शोषण के प्रतिरोध तथा सामाजिक परिवर्तन की चेतना सभी को विद्या में अपना आधार ढूँढ़ना पड़ता है। एक वाक्य में कहें तो विद्या मनुष्य की सक्रियता का वह रूप है जिसे मनुष्य से अलग नहीं किया जा सकता।

अगर लोगों के मन का और सबके लिये न्याय का समाज बनना है तो उसे आम लोगों की सक्रियता पर ही आधारित होना होगा और इस सक्रियता का आधार उनकी अपनी विद्या में ही हो सकता है। किसानों, कारीगरों, छोटे–छोटे दुकानदारों, महिलाओं और आदिवासियों के पास जो विद्या है उसे लोकविद्या कहते है। लोकविद्या के आधार पर खड़ी हुई राजनीति आज तक की सबसे साफ राजनीति होगी। धर्म और पूँजी के बल पर खड़ी राजनीति इसके सामने टिक नही सकेगी। लोकविद्या में जमाने की आस्था जागृत करना और लोकविद्या धारक समाज में अपनी विद्या की असीम शक्ति के प्रति विश्वास पैदा करना आज क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन की पहली शर्त है।

भाग 1

परिवर्तन

दुनिया में बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा है जिसे औद्योगिक समाज से ज्ञान आधारित समाज में बदलाव कहा जा रहा है। सभी जगह आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक बदलाव हो रहे हैं। वैश्विक स्तर पर सत्ता का पुनर्वितरण हो रहा है और शोषण, उत्पीड़न और बहिष्कृत करने के नये तरीके उभर रहे हैं। उद्योग, ऊर्जा, शिक्षा, कृषि, साइंस, कला, व्यापार, मीडिया, मनोरंजन के रूप, सभी बदल रहा है। रिहायशी बस्तियाँ, सम्पर्क, शासन, राष्ट्रों के बीच सम्बन्ध सभी कुछ तेजी से बदल रहा है। नीचे इस बदलाव के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं और प्रक्रियाओं को पेश किया जा रहा है।

1. उद्योग

- पहली दुनिया से तीसरी दुनिया में स्थानांतरण।
- बड़ी इकाई से छोटी इकाई में परिवर्तन।
- उत्पादन से प्रबन्धन का महत्व बढ़ना।
- विविध ज्ञान एक नया संसाधन बना है।
- पूँजी का नया रूप सूचना है।

2. कृषि

- रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर।
- जैव संशोधित बीज एक नया रहस्य।
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रवेश।

- छोटे खेतों पर नगदी फसल की ठेकेदारी प्रथा का जन्म।

3. **शिक्षा**

- कक्षा से इन्टरनेट की ओर।
- सरकारी से निजी उद्यम में परिवर्तन।
- साइंस व सामाजिकी से कम्प्यूटर व प्रबन्धन का अधिक महत्व।
- रोजगार दे पाने वाली शिक्षा अत्यधिक महँगी तथा बहुसंख्य की पहुँच से दूर।

4. **बाजार**

- राष्ट्रीय नियंत्रण से विश्व व्यापार संगठन का नियंत्रण।
- नये क्षेत्रों जैसे खाद्य, शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य–रक्षा, ज्ञान, आदि में व्यापार फैलना।
- मॉल बाजार का विस्तार।

5. **ज्ञान**

- ज्ञान के उत्पादन से ज्ञान के प्रबन्धन की ओर।
- सूचना के संगठन और संचार का नया तरीका–कम्प्यूटर–इन्टरनेट।
- ज्ञान–गतिविधि के नये प्रकार और स्थान बने हैं– बौद्धिकता हासिल करने का नया क्षेत्र मायावी दुनिया (Virtual Domain) A
- भाषा–अध्ययन का महत्त्व बढ़ रहा है।
- भौतिकी और रसायन विज्ञान की तुलना में जीव विज्ञान का महत्त्व बढ़ रहा है।

- प्रतीकों एवं बिम्बों की दुनिया वास्तविक दुनिया पर हावी हो रही है।
- समाज में ज्ञान यानी लोगों के पास का ज्ञान अधिक सार्वजनिक आकार ले रहा है। यह दो रूपों में हो रहा है– एक, सूचना–समाज के विकास के नये संसाधन के रूप में और दूसरा, सूचना–युग में लोकदृष्टि के विकास के आधार के रूप में।

6. शहर

- शहर अब उत्पादन के स्थान से बाजार के स्थान बन रहे हैं।
- गरीब जनता शहर से खदेड़ी जा रही है।
- नये शहर नये सामाजिक विभाजन (डिजिटल विभाजन) के प्रतिरूप हैं। शहर अब नये रईसों के घर होंगे।

7. मीडिया और मनोरंजन

- व्यक्तिगत संचार के तरीकों मोबाइल, ई–मेल का तेजी से विस्तार।
- केबल टी.वी. के रूप में जन–मीडिया में एक नया सम्मोहन जिसने धारावाहिक, संगीत, समाचार और खेल को नशे के स्तर पर पहुँचाया है।
- पर्यटन एक बढ़ता मनोरंजन उद्योग बना है।
- मीडिया और मनोरंजन उद्योग में इजारेदारी है जिसके चलते सूचना का बहाव बेहद संकुचित हो चला है। यह पूरा उद्योग केवल कारपोरेट हितों की सेवा में है।

8. **इन्टरनेट**

- सम्पर्क, सूचना, संचार और मनोरंजन का असीमित और अबाधित स्थान।
- व्यक्ति–व्यक्ति के बीच गतिविधियों का एक नया मायावी संसार जहाँ से समूह/समाज का निर्माण, आर्थिक विनिमय, राजनीतिक गोलबन्दी, शिक्षा, प्रबन्धन, प्रशासन आदि सभी कुछ होता है।
- साइंस, कला, खेल का नया स्थान।
- एक नई और मायावी दुनिया बनने की प्रक्रिया में है।

9. औद्योगिक समाज और ज्ञान आधारित समाज में क्या अंतर है?

	औद्योगिक समाज	**ज्ञान आधारित समाज**
1.	श्रम का संगठन होता है।	सूचना का संगठन होता है।
2.	ज्ञान के क्षेत्र में साइंस को सर्वश्रेष्ठ व नियामक ज्ञान का दर्जा है।	ज्ञान–प्रबन्धन को सर्वश्रेष्ठ व नियामक ज्ञान का दर्जा मिल रहा है।
3.	ज्ञान के संगठन का स्थान विश्वविद्यालय रहे।	ज्ञान के संगठन का स्थान इन्टरनेट है।
4.	यह उपनिवेशीकरण के मार्फत बना।	यह वैश्वीकरण के साथ बन रहा है।
5.	इसका केन्द्र यूरोप में था।	इसका केन्द्र अमेरिका में है।

10. औद्योगिक युग से सूचना युग

- पूँजीवाद से नये साम्राज्य की ओर।
- उद्योगों के संगठन से ज्ञान के संगठन की ओर।
- औद्योगिक पूँजी से सूचना पूँजी की ओर।

11. राष्ट्र व राज्य

- राष्ट्र और राज्य–सत्ता के बीच का रिश्ता कमजोर हुआ है।
- पूँजी, उत्पाद, वित्त, लोग, सुरक्षा, मूल्य, मानवीय आयाम और प्राकृतिक संसाधन आदि के इस्तेमाल पर से व उनकी अन्तर्राष्ट्रीय गति पर से राज्य सत्ता राष्ट्रीय नियंत्रणों को हटा ले रही है।
- राज्य को वैधता देने वालों (राष्ट्र व लोगों) के प्रति राज्य अब 'जिम्मेदार' नहीं है।
- विकास और कल्याण के मुद्दे राज्य ने हाशिये में डाल दिये हैं। राष्ट्र किंकर्त्तव्यविमूढ़ है।

12. साम्राज्यवाद से नव–साम्राज्य की ओर

- राष्ट्र व राज्य के बीच सम्बन्धों का टूटना और औद्योगिक साम्राज्यवादी व्यवस्था का टूटना साथ–साथ हो रहा है।
- सूचना–संचार प्रौद्योगिकी से एक नयी सम्पर्क व्यवस्था स्थापित हो रही है जिससे एक नई विश्व व्यवस्था बन रही है। यह नया साम्राज्य है।
- साम्राज्य की व्यवस्था डिजिटल विभाजन पर आधारित है। डिजिटल विभाजन समाज का वह

विभाजन है जिसमें एक ओर ज्ञान प्रबन्धन व इन्टरनेट की मायावी दुनिया है, और दूसरी ओर असली दुनिया है जो ज्ञान व अन्य वस्तुओं का उत्पादन करने वालों की दुनिया है। इस विभाजन के दोनों हिस्सों के बीच का रिश्ता शोषण पर आधारित है।

- नये युद्धों और सभी तरह के भेद व अन्यायों का मुख्य स्रोत इस शोषण में है। जैसे– विस्थापन, संसाधनों पर नियंत्रण, विश्व व्यापार संगठन के तहत व्यापार नियम, पेटेण्ट कानून आदि।

- साम्राज्यवाद में राष्ट्र–राज्यों के मार्फत शासन की व्यवस्था थी। सभी राष्ट्र–राज्यों को बराबरी की मान्यता थी। नये साम्राज्य में शासन करने वाली राज्य व्यवस्था का एक श्रेणीबद्ध अंतर्राष्ट्रीय ढाँचा है। यही नया राज्य है जिसका शीर्ष साम्राज्य का शीर्ष है।

भाग 2
लोगों के जीवन पर प्रभाव

इन्टरनेट (सम्पर्क) की दुनिया के विकास ने समाज में एक नया विभाजन पैदा किया है। इस विभाजन ने क्षेत्र, वर्ग, लिंग और नस्ल पर आधारित भेद विरासत में पाये हैं। लोगों की समस्याओं को पूरी तरह नज़रअन्दाज कर राजनीति नाक के बल गिर पड़ी है। सूचना–संचार प्रौद्योगिकी के मार्फत विकास हो इसकी कीमत चुकाने के लिए राष्ट्र को मनाया जा रहा है। इस भाग में लोगों के जीवन पर आ रहे प्रभावों की एक संक्षिप्त तस्वीर खींचने का प्रयास किया गया है।

1. मजदूर

- रोजगार का छीना जाना।
- मजदूर संगठनों का टूटना।
- शहरों से मजदूर बस्तियों का उजड़ना।
- मजदूरी का कम होना, सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा का छीना जाना जिसे संघर्षों और बलिदान से मजदूरों ने हासिल किया था।
- कम्प्यूटर उद्योग और काल–सेन्टरों पर मजदूरों की खराब स्थिति।

2. किसान

- आमदनी में गिरावट।
- लागत और बिक्री की क्रियाओं में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का जाल।

- बढ़ते बाजारीकरण, बैंकिंग व्यवस्था, कर्ज और रियायतों को हटा लेने आदि से उत्पन्न संकट से उबर पाने की असमर्थता।
- विशेष आर्थिक क्षेत्र और रिहायशी इलाकों के लिए सरकार द्वारा जमीनों का अधिग्रहण।
- कृषि उत्पाद की कीमतों का गिरना।
- किसानों द्वारा बड़े पैमाने पर आत्महत्याएँ।
- किसानों के पास विद्यमान कृषि के पारम्परिक ज्ञान को मान्यता मिलना शुरु होना।

3. कारीगर

- उनके ज्ञान और हुनर को पुनः मान्यता मिलने की क्रिया चली है। यह ज्ञान ही उनका अपना है शेष सब यानी वित्त, बाजार और कच्चा माल उनसे दूर अजनबी ताकतों के हाथ में होता है।
- पारिश्रमिक की दर और वास्तविक आमदनी दोनों में गिरावट।
- कारीगरों का एक नया वर्ग अस्तित्व में आया है जैसे वे कारीगर जिनमें मीडिया के हुनर हैं, भाषा का हुनर है और साफ्टवेयर बनाने की क्षमतायें हैं।

4. स्त्रियाँ

- सामान्यतः स्त्रियों का वस्तुकरण बढ़ा है विशेषतः मनोरंजन उद्योग के मार्फत।
- मजदूर, कारीगर और किसान परिवार की गृहिणियों के रूप में कष्टों में बढ़ोत्तरी।
- डिजिटल विभाजन के दो हिस्सों में जुड़ाव न होने से घरों में या आसपास में किये जा सकने वाले

कार्यों में स्त्रियों के ज्ञान को अधिक अवसर मिलना।

5. आदिवासी

- सम्पर्क की नई व्यवस्थाओं के चलते समाज से बहिष्कृत पुरानी स्थिति से बाहर आने की सम्भावनायें।
- आदिवासी समाज में वर्ग निर्माण की क्रिया में तेजी।
- मजदूर, कारीगर और किसान के रूप में प्रभावित।
- इनके पास विद्यमान प्रकृति और प्राकृतिक क्रियाओं के बारे में ज्ञान को मान्यता मिलना।

6. छोटे दुकानदार

- मुख्य बाजार के स्थानों से खदेड़ा जाना।
- औद्योगिक गतिविधियों से विस्थापन और मध्यम श्रेणी की नौकरियों के खत्म होने से इनकी संख्या में वृद्धि होना।
- फुटकर व्यापार में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रवेश से धन्धों का उजड़ना।

7. नौजवान

- शिक्षा का बहुत महँगा होना।
- निचले स्तर के रोजगारों में आमदनी का बहुत कम होना।
- बेरोजगारों की संख्या का बढ़ना।
- मार्केटिंग, मनोरंजन और मीडिया के नये रोजगारों में अनिश्चितता और असुरक्षा।

- नौजवानों के एक छोटे–से वर्ग के लिए मौजमस्ती और चमक की खर्चीली जिन्दगी में प्रवेश के मौके बनना।

8. **मध्यम वर्ग**

- सामाजिक और आर्थिक असुरक्षा का तेजी से बढ़ना।
- स्वरोजगार का अधिक अस्थाई व अलाभकारी होना
- नौकरी पेशा कर्मचारियों में कल्याणकारी सुविधाओं का घटना।
- साफ्टवेयर, संचार, मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में नये अवसरों का बनना।

भाग 3

जन–प्रतिरोध

1. इस्लामी सशस्त्र विरोध

- यह मूलतः अमेरिका विरोधी है।
- यह पश्चिम एशिया में केन्द्रित है।
- यह दुनिया के सभी मुसलमानों को लामबन्द करता है।
- अमेरिका विरोध और इज़राइल विरोध दोनों का ही आधार वैचारिक है।

2. वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलन

- विश्व व्यापार संगठन को दुनिया में सभी जगह विरोध का सामना करना पड़ रहा है। मजदूरों और किसानों के संगठन इस विरोध के अगुआ हैं।
- वैश्वीकरण का विरोध सामान्यतः और ठोस रूप में अमेरिका के विरोध का रूप लेता है।
- लैटिन अमेरिका का वामपंथ अमेरिका–विरोध को केन्द्र बनाते हुए बड़ी ताकत के रूप में उभर रहा है।
- धर्मनिरपेक्ष ताकतों के एकजुट होने का एक नया केन्द्र विश्व सामाजिक मंच है। वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलनों को काफी हद तक यह समेटता है।

3. युद्धविरोधी आन्दोलन

- अफगानिस्तान और इराक में अमेरिकी युद्धों का लोगों ने बड़े पैमाने पर विरोध किया है।

- ज्यादातर स्थानों पर वैश्वीकरण के विरोध के आन्दोलन इसमें शामिल हुए हैं।

4. विस्थापन का विरोध

- विस्थापन के कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रकार नीचे दिये जा रहे हैं जिनके खिलाफ विस्थापितों ने विरोध किया है। राजनीतिक दलों ने साथ नहीं दिया है लेकिन नागरिक और सामाजिक संगठन आगे आये हैं।
- बाजार के पुनर्संगठन में छोटी दुकानों और फेरीवालों का विस्थापन।
- शहरों के पुनर्संगठन में बस्तियों, यातायात और शहर के ढाँचे का नवीनीकरण किया जा रहा है जिससे कारीगर, मजदूर और पटरी–ठेलों पर धंधा करने वालों की बस्तियाँ उजाड़ी जा रही हैं।
- नदियों की परियोजनाएँ तथा बड़ी कम्पनियों के लिए भूमि का अधिग्रहण किसानों और आदिवासियों को विस्थापित कर रहा है।

5. सामाजिक विषमता का विरोध

जाति, लिंग, धर्म और नस्ल पर आधारित विषमता अभी भी जारी है और इस विषमता के शिकार लोगों द्वारा विरोध भी जारी हैं। इनमें से ज्यादातर विरोध स्थानीय हैं पर कभी–कभी राजनैतिक स्तर पर संगठित भी होते हैं।

6. प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण के आन्दोलन

- सरकार और बड़ी कम्पनियों द्वारा भूमि के अधिग्रहण का विरोध
- स्थानीय समुदायों द्वारा पहाड़ और जंगलों पर नियंत्रण के आन्दोलन

- बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा प्राकृतिक जल के बेतहाशा इस्तेमाल का विरोध।

7. मुक्त और खुले साफ्टवेयर स्रोत के पक्ष में आन्दोलन

- साफ्टवेयर सिस्टम्स के मालिकाने के विरोध के आन्दोलन
- मुक्त और खुले साफ्टवेयर सिस्टम्स को बनाने और प्रचारित करने के आन्दोलन
- कानूनी लड़ाई।

8. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा देशज ज्ञान का पेटेण्ट कराने के विरोध के आन्दोलन

- पारम्परिक और देशज ज्ञान पर समुदाय के अधिकार के पक्ष में आन्दोलन
- नागरिक संगठनों द्वारा कानूनी लड़ाइयाँ।

भाग 4

जन–प्रतिरोधों का विद्यागत आधार

प्रतिरोधों को उनके वैचारिक और विद्यागत आधार पर विभिन्न श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। अगर ऐसा करें तो कुछ इस तरह का चित्र उभरता है।

- **इस्लामी सशस्त्र विरोध :** इस्लामी सशस्त्र विरोध या इस जैसे अन्य धर्म–आधारित संघर्ष धार्मिक ज्ञान और विचार पर आधारित हैं। इनका आधार जिन ज्ञान धाराओं में है वे औद्योगिक युग के पहले से चली आ रही हैं।

- **वामपंथी आन्दोलन :** इनके विद्यागत वैचारिक आधार का स्रोत औद्योगिक युग की ज्ञान पद्धति में है। मुक्ति के विचार का ठोस आधार ये साइंस और साइंटिफिक पद्धति में मानते हैं।

- **वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलन :** ये आन्दोलन विविध वैचारिक आधारों पर खड़े हुए हैं। अलग–अलग स्थानों पर अलग परम्पराओं की प्रधानता है जैसे मार्क्सवादी, गांधीवादी, समाजवादी, उदारवादी और स्थानीय परम्परायें।

- **विस्थापन का विरोध :** विस्थापन के विरोध के आन्दोलन जीवन बचाने के स्वयंस्फूर्त घटनाक्रम हैं। ये किन्हीं सटीक ज्ञानगत अथवा वैचारिक आधारों पर होते हैं ऐसा नहीं है।

- **सामाजिक विषमता का विरोध :** कुछ एक अपवादों को छोड़ दें तो सामाजिक विषमता के विरोध के आन्दोलनों ने साइंस को श्रेष्ठ ज्ञान का दर्जा दिया था और औद्योगिक समाज में अपने लक्ष्यों की पूर्ति देखी थी। सामाजिक बराबरी के मूल्य को प्रधान लक्ष्य बनाने वाले संघर्ष अब भी

जारी हैं और इनमें ऐसे संघर्ष भी हैं जो साइंस के अलावा ज्ञान के अन्य प्रकारों को स्वीकारने और सम्मान देने में खुला दृष्टिकोण रखते हैं।

- **प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण के आन्दोलन :** जल, जंगल और जमीन पर नियंत्रण के आन्दोलन औद्योगिक युग के उन राजनैतिक आन्दोलनों की निरंतरता में हैं जो 'कच्चे माल पर नियंत्रण' और 'जमीन जोतने वाले की' इन मुद्दों को केन्द्र में रखते थे। लेकिन ये आन्दोलन अपने विद्य ागत आधार को साइंस के बाहर आकार दे सकें, इतने खुले तो हैं ही। इन आन्दोलनों में समाज में, लोगों के पास विद्यमान ज्ञान के प्रति रूझान और झुकाव को पहचाना जा सकता है।

- **मुक्त और खुला साफ्टवेयर स्रोत :** ये आन्दोलन इन्टरनेट पर बढ़ती ज्ञान गतिविधियों से रिश्ता रखता है। ये ज्ञान गतिविधि और ज्ञान प्रबन्धन पर बड़ी कम्पनियों के नियंत्रण अथवा कब्जे के विरोधी हैं।

- **ज्ञान पर निजी मालिकाने का विरोध :** पारम्परिक और देशज ज्ञान पर बड़ी कम्पनियों के निजी मालिकाना स्थापित करने की क्रियाओं का विरोध करने वाले आन्दोलनों में एक अन्तर्निहित धारा है जो मानती है कि जो लोग जैसा सोचते, जानते और करते हैं उसे ज्ञान का दर्जा दिया जाये।

- इस प्रकार समाज में आज के सक्रिय जन–प्रतिरोधों पर नज़र डालने पर हमें समाज में 'ज्ञान' के निम्नलिखित विभिन्न प्रकार मिलते हैं :–

  (क) धार्मिक ज्ञान
  (ख) साइंस
  (ग) इंटरनेट पर ज्ञान गतिविधि
  (घ) लोगों के पास ज्ञान (लोकविद्या)

इनमें से पहली तीन धारायें संगठित ज्ञान की धारायें हैं।

- अब हम शायद कह सकते हैं कि संगठित ज्ञान की कोई एक धारा या तीनों धारायें मिलकर जो आधार बनाती हैं वह किसी क्रान्तिकारी राजनीति यानी मुक्तिदायी विचार के लिए नाकाफी हैं। लेकिन आज संगठित ज्ञान पद्धतियाँ हावी हैं और समाज के ज्ञान (लोकविद्या) को बहुत कम सम्मान है। ऐसे में किसी क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए लोकविद्या को पर्याप्त आधार बनाने का दावा करना एक दुरूह कार्य है। आज हम यहीं खड़े हैं और रास्ता ढूँढ़ रहे हैं। विभिन्न ज्ञान की धाराओं या ज्ञान की गतिविधि के विभिन्न स्थानों के बीच खुला संवाद एक रास्ता खोलने की क्षमता रख सकता है। लेकिन किसी भी संवाद के लिये मूल्यों के एक ढाँचे की जरूरत होती है, सभी के खड़े होने के लिये एक स्थान की जरूरत होती है जो निष्पक्ष हो और ऐसा मालूम भी पड़े। इसलिए जिस कठिन परिस्थिति में हम अपने को पा रहे हैं उसमें यह जरूरी मालूम पड़ता है कि मूल्यों का यह ढाँचा ज्ञान और जीवन के ऐसे विचारों पर आधारित हो जो मानव जाति के स्वभाव और अस्तित्व को ही व्यक्त करते हो।

भाग 5

लोकविद्या और सामान्य जीवन

- लोकविद्या लोगों के पास वह ज्ञान है जो निरंतर उनके अनुभव, जरूरत, नीति व सौन्दर्य–सन्दर्भ आदि के साथ बदलता रहता है। इसमें लोगों के विचार, संगठन के सिद्धान्त, अमूर्तीकरण के प्रकार निहित हैं। यह जानकारी, तकनीक, पद्धति, विशेषज्ञता आदि से बना होता है। लोकविद्या में ऐसा कुछ भी नहीं है जो परिवर्तित नहीं होता या परिवर्तनशील नहीं है। यह सामान्य जीवन के साथ विकसित होती है, इसी में घुल–मिल जाती है और कभी नहीं मरती क्योंकि सामान्य जीवन कभी नहीं मरता। सामान्य जीवन की कोई शर्त नहीं होती। यह किसी से नहीं बँधता। यह इन या उन ज्ञान के संचार व संगठन के तरीकों, धर्म, साइंस या तकनीकी पर निर्भर नहीं होता। सामान्य जीवन कोई हमेशा सत्य, नैतिक अथवा सादगीपूर्ण नहीं होता। उसमें झूठ, खर्चीलापन और अनैतिक व्यवहार भी होता है। लेकिन उसमें सत्य, नैतिकता, न्याय और विवेक इत्यादि की कसौटियाँ होती हैं जिनका सतत संदर्भ प्रभावी होता है।

- लोकविद्या में लोगों की विद्यागत शक्ति होती है। यह निरंतर बाहरी आक्रामक ताकतों के अत्याचार, तोड़फोड़ और वंचित करने वाली क्रियाओं के बीच ज़िन्दा रहने के और पुनर्रचना व विकास के नये तरीके पैदा करती रहती है। लोकविद्या की ज्ञान परम्परायें तभी मरती हैं जब उनके धारक विस्तारवादी हो जाते हैं, औरों को गुलाम बनाने लगते हैं और उनका शोषण करने लगते हैं। यह एक सामान्य सामाजिक विद्यागत नियम है। इसलिए लोकविद्या

लोगों की शक्ति का एक कभी न खत्म होने वाला स्रोत है। लोकविद्या का आधारभूत मूल्य सामान्य जीवन ही है। सादगी भरा जीवन नहीं, सरल जीवन भी नहीं, सिर्फ सामान्य जीवन। 'लोकविद्या' और 'सामान्य जीवन', इन युगल अवधारणाओं के सहारे हम उन अवधारणाओं को गढ़ने की ओर बढ़ सकते हैं जो मुक्तिदायी प्रतिरोध के विकास का रास्ता खोलती हैं।

- नये उदीयमान शासकवर्ग सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही क्षेत्रों में ज्ञान को केन्द्र में रखकर अपने को संगठित कर रहे हैं। ज्ञान प्रबन्धन उनकी सबसे मूल्यवान गतिविधि है। इसलिए डिजिटल विभाजन वास्तव में एक मौलिक ज्ञान विभाजन है। इस ज्ञान विभाजन के दूसरी तरफ समाज में विस्तृत ज्ञान है यानी लोकविद्या है। लोकविद्या इस ज्ञान विभाजन के आक्रामक पक्ष से संघर्ष में रत होकर उत्तरोत्तर साइंस और धार्मिक ज्ञान को अपने में समाहित करती जा सकती है।

- हम ऐसा नहीं सोचते कि कोई ऐसा भी ज्ञान हो सकता है जो मुक्तिदायी राजनीति के विकास में योगदान ही न कर सके। इसलिये सभी प्रकार की विद्याओं के बीच वार्ता वह विचार बनाने में सहायक सिद्ध होगी जो समाज के डिजिटल विभाजन को सक्षम चुनौती दे सके । ऐसी वार्ता के लिये मूल्यों के एक व्यापक ढाँचे की ज़रूरत है। मूल्यों का यह ढाँचा लोकविद्या और सामान्य जीवन के मूल्यों से बनता है। इसके दो कारण हैं। पहला, लोकविद्या और सामान्य जीवन ज्ञान और जीवन की मौलिक अभिव्यक्ति हैं। और दूसरा, ये लोकशक्ति के मौलिक स्रोत हैं। इनके चलते इनसे बना हुआ मानकों का ढाँचा डिजिटल विभाजन से मुक्ति की प्रक्रियाओं का पक्षधर होगा।

- लोकविद्या दृष्टिकोण सूचना के युग का जन दृष्टिकोण है। हम यह कहते हैं कि समाज में अनेक सम्मान योग्य और

सच्ची ज्ञान परम्परायें हैं लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि इन्हीं ज्ञान परम्पराओं के बल पर लोगों की सभी समस्याओं का हल ढूँढ़ा जा सकता है या यह कि उनमें एक नई दुनिया के निर्माण का पूरा आधार है। लोकविद्या और सामान्य जीवन एक–दूसरे में ताकत, प्रतिरक्षा और पहल का संचार करते हैं, इसका यह अर्थ यह नहीं है कि वे स्वतः में ही पूर्ण हैं और उनसे बनने वाला सामाजिक–राजनीतिक विचार एक नई दुनिया बनाने का कोई फार्मूला देता है। हम केवल इतना कह रहे हैं कि लोकविद्या और सामान्य जीवन हमारे प्रारम्भिक बिन्दु हैं, सतत सन्दर्भ हैं और अन्तिम कसौटी हैं। लोकविद्या दृष्टिकोण सूचना के युग का सत्य और न्याय का दृष्टिकोण है। यह ज्ञान–प्रबन्धन और वैश्वीकरण द्वारा वैश्विक और सम्पर्कयुक्त समाज का जो महाझूठ दुनिया पर थोपा जा रहा है उसके खिलाफ लड़ने में लोगों को सक्षम बनाता है। यह हमारे संघर्षों को टिकाऊ बनाता है क्योंकि यह हमें अलग ढंग से सोचना सिखाता है।

भाग 6

अगली मुक्ति की लड़ाई विद्या के सवाल पर होगी

21वीं सदी में मानवमुक्ति के संघर्षों की बुनियाद विद्या के सवाल पर ही टिकेगी। पश्चिम में दो दशकों पहले से सूचना का प्रश्न सबसे अधिक महत्व का बनना शुरु हुआ। अपने यहाँ लगभग दस साल से यह क्रिया चल रही है। शिक्षा, बाजार, वित्त, राजनीति, उत्पादन के तरीके, प्राकृतिक संसाधन, रोजगार, मानव समुदाय, ग्रामीण समाज, सभी क्षेत्रों में सूचना, उसका तंत्र, उसकी पहुँच, उसका प्रभाव इसी के इर्द–गिर्द बातें घूम रही हैं। 'सूचना' की यह अभिव्यक्ति कम्प्यूटर, टेलीफोन, मोबाइल, टेलीविजन, केबल नेटवर्क आदि के रूप में सामने आती है। थोड़े से लोगों को इसके फायदे हो रहे हैं। वे पैसे खर्च करते हैं, नये–नये कपड़े पहनते हैं, गाड़ियों पर घूमते हैं और बाजारों में दिखाई देते हैं। लेकिन इनकी संख्या कम है। अधिकतर लोग सूचना के दुष्प्रभाव के शिकार हैं। उनका रोजगार छिन गया है, उनके बच्चे पढ़ नहीं सकते। जिन व्यवस्थाओं में वे रहते हैं वे चरमरा गई हैं। नागरिक सुविधाएं उन तक पहुँचती नहीं हैं। उनकी लगभग एक पीढ़ी अब धार्मिक उन्माद में डूब–उतरा चुकी है। आजादी के 50 साल का बहकावा अब खत्म होना चाहिए। विश्वविद्यालयों के मार्फत पश्चिम से आयातित ज्ञान समाज में फैलेगा, उसे अक्लमंद और समृद्ध बनायेगा, इस झूठ का पर्दाफाश हो चुका है। कोई तो कहे कि राजा नंगा है?

जरूरत है हमें अपनी विद्या जागृत करने की। यह आसान नहीं है। क्योंकि सोये को नहीं जगाना है। जागे को जागृत करना है। हम सबके पेट अपनी ही विद्या के बल पर भरते हैं। औरों के पेट भी हमारी विद्या के बल पर भरते हैं। मिट्टी, पानी, लकड़ी, चमड़ा, लोहा, पेड़–पौधे, सगे–सम्बन्धी, पड़ोसी, साथी, सहचर इनका दर्द हम समझते हैं और हमें बताया जा रहा है कि हम सूचना का राज नहीं समझते? हमें पहचानना होगा कि लड़ाई किससे है और रणक्षेत्र कौन–सा है? सूचना मायावी विद्या का रूप

है। इससे मोर्चा वही सभ्यता ले सकती है जिसकी विद्या की परम्परा अटूट है।

इस देश की परम्परा किसानों और कारीगरों की परम्परा है, न अंग्रेजी बोलने वालों की और न मंतर पढ़ने वालों की। यह लोकविद्या की परम्परा है। विश्वविद्यालय का प्रोफेसर विद्या की प्रतिष्ठा का प्रतीक नहीं है, बल्कि लोकविद्या–परम्परा के तिरस्कार का प्रतीक है। जो लोग ये मानते हैं कि किसानों और कारीगरों के पास विद्या की अकूत सम्पदा है, कहते हैं बड़ी टूटी–फूटी अवस्था में है, असंगठित है, निजी है। लेकिन साबूत यदि काँटेदार हो तो हम टूटे–फूटे ही भले। संगठन का अर्थ यह नहीं है कि मशीन बना दी जाय। वे नहीं जानते सार्वजनिकता अंग्रेजी बोलने वालों के घरों की नौकरानी नहीं है। विद्या की यह लड़ाई मामूली लड़ाई नहीं बनने वाली है। धर्म, राजनीति, बाजार, शिक्षा सभी में झाड़ू लगेगा, एक–एक कोना साफ करना होगा।

गाँव–गाँव, हर घर और हर मुहल्ले में विद्या के सवाल पर बहस होनी है। बहिष्कृत समाज की शक्ति के संयोजन का वह माहौल बनाना है कि दुश्मन खुद हथियार डाल दे। विद्या की बहस उस आत्मबल को जन्म देगी जिसके बिना यह लड़ाई न लड़ी जा सकती है और न जीती जा सकती है। 'सूचना' होगी तो दिल्ली में अमेरिका होगा, रास्तों पर लड़कियों की रंगीन तस्वीरें होंगी और घ ार में खाना नहीं होगा। बहुत लोग कहते हुए मिलेंगे कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। जो विश्वव्यापी है उससे मुकाबला करने की बेवकूफी की बातें न करें। इनमें मूर्ख भी हैं और बदमाश भी। हमें दोनों की सलाह से बचना है। सब जानते हैं कि अंग्रेजी राज मुश्किल से 100 साल भी नहीं चल पाया। रूस और चीन में कम्युनिस्टों ने पूँजी का राज बनने के पहले ही उसे ध्वस्त कर दिया। जहाँ लोग रहते हैं और जहाँ किसानों और कारीगरों की विद्याओं के रहमोकरम पर जिन्दगी चलती है वहाँ सूचना का राज बनने के पहले क्यों नहीं ध्वस्त किया जा सकता? जिसका चेहरा राक्षस का है और जिसके हाथ में पिस्तौल है क्या वह गोली चला देगा तभी समझ में आयेगा कि वह हत्यारा है? विद्या साफ्टवेयर

नहीं है और न विद्या हार्डवेयर ही है। विद्या वह जीवन्त अनुभूति है, मनुष्य की प्रकृति का वह पहलू है जो कला और विज्ञान को अलग नहीं होने देता, वस्तुओं को उनकी बनावट से नहीं बल्कि उनके माहात्म्य से पहचानता है। जब से विश्वविद्यालय बने हैं विद्या पर बहस बन्द है। विद्या पर बहस खोले बगैर केवल अंधेरा है, काँटे हैं और गड्ढे हैं।

विद्या आश्रम

सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007
फोनः 0542–2595120,
web site :vidyaashram.org

विद्या आश्रम की मूल मान्यता यह है कि जब तक ज्ञान की गतिविधियों में पूरा समाज नही शामिल होता और जब तक लोकविद्या को उत्कृष्ट ज्ञान की प्रतिष्ठा नही मिलती तब तक बराबरी और भाईचारे का गरीबीमुक्त समाज नही बनाया जा सकता। स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर इस विचार की स्थापना और सघन जनसम्पर्क व रचनात्मक कार्यों के मार्फत इसे लोकहित की कसौटी पर जाँचने के कार्य विद्या आश्रम से होते हैं।

विद्या आश्रम की समझ

1. कम्प्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल ज्ञान और सूचना की एक नई दुनिया बना रहे हैं।
2. निजीकरण और मॉल–बाजार इस दुनिया की आर्थिक बुनियाद बना रहे हैं।
3. शिक्षा का विद्या के साथ सम्बन्ध ढीला हो रहा है और अब शिक्षा केवल नये धनाढ्यों के लिये सेवक तैयार करने का जरिया बन रही है।
4. कला में विद्या अथवा साधना का रूप न देखकर उसे केवल मनोरंजन का साधन बनाया जा रहा है।
5. मीडिया इस दुनिया को बनाने के एक प्रमुख साधन के रूप में उभर रहा है और दावा कर रहा है कि वह खुद विद्या का एक स्थान है।
6. सत्तर फीसदी जनता बेहाल है। किसान, कारीगर और छोटे–छोटे दुकानदार उजड़ रहे हैं और मज़दूरी में लगातार गिरावट आ रही है।

7. राजनीति और दर्शन अपने ज्ञान–आधारों से विमुख हो गये हैं और या तो इस दौर में शामिल हो गये हैं या फिर तत्काल की समस्याओं से राहत दिलाने में जुटे हैं।
8. किसान और कारीगर अपने–अपने उत्पादन कार्यों का विस्तृत ज्ञान रखते हैं। महिलायें खेती और पारिवारिक उद्योगों में बराबर की भागीदार हैं व उनकी अच्छी जानकारी रखती हैं। बच्चों के लालन–पालन, घरेलू शिक्षा और प्राथमिक उपचार की वे सबसे अच्छी जानकार मानी जाती हैं। आदिवासियों के वनों–वनस्पतियों और जानवरों के बारे में ज्ञान का लोहा जंगल विभाग वाले भी मानते हैं। छोटी दुकान, गुमटी, ठेला व पटरी पर छोटा धन्धा करने वाले लोग अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रबन्ध की दक्षता रखते हैं। इन सभी लोगों की इन विद्यागत क्षमताओं की समाज में पहचान बहुत धुंधली है। लोकविद्या की उचित पहचान समाज को अभूतपूर्व गति दे सकती है।

कार्य

1. ज्ञान के क्षेत्र में लोकोन्मुख ऊर्जा का संचार करना।
2. ज्ञान और उस पर आधारित गतिविधियों को ज़मीनी बनाना।
3. ज्ञान को पूँजीपतियों, कम्पनियों व नियंत्रणकारी नियम–कानूनों से मुक्त करने का अभियान चलाना।
4. लोकविद्या के विचार का प्रचार व प्रसार करना तथा लोकविद्या की सामाजिक प्रतिष्ठा के लिये कार्य करना।
5. शिक्षा, कला, बाजार और मीडिया के क्षेत्रों में विद्या के सवाल पर बहस खड़ी करना।
6. ज्ञान को मुक्त करने व लोकविद्या के पक्ष में इंटरनेट पर बहस चलाना।

7. किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, महिलाओं व छोटा धन्धा करने वालों के ज्ञान की सामाजिक पहचान बनाना।

कार्यक्रम

इस वक्त विद्या आश्रम निम्नलिखित कार्यक्रम चला रहा है।

1. भाईचारा विद्यालय

- सारनाथ के क्षेत्र में कुछ गाँवों में शाम के समय गरीब वर्गों के बच्चों को पढ़ाने का काम होता है। उनकी क्षमताओं के विकास के लिये खेलकूद, कथा–उत्सव, गीत–उत्सव आदि को पढ़ाई में शामिल किया गया है।
- इन विद्यालयों से उस गाँव के और आसपास के ग्रामवासियों के साथ विद्या–वार्ता चलाई जाती है। उनका विश्वास उनकी अपनी विद्या में बढे और उसे वे अपनी शक्ति और संगठन के आधार स्रोत के रूप में देखे इसका प्रयास किया जाता है।

2. चिंतन ढाबा

आश्रम के सामने सड़क के किनारे एक चिंतन ढाबा चलाया गया है। यहाँ एक चाय की दुकान है। ढाबे पर पत्र–पत्रिकायें पढ़ने के लिये रखी रहती है। रोज शाम को आश्रम के कार्यकर्ता ढाबे पर आने वाले लोगों के बीच वैचारिक चर्चायें करते हैं। आसपास के काफी लोग इन चर्चाओं में भाग लेने बराबर आते हैं। पास के ग्रामीण क्षेत्रों में उपयुक्त ढाबों को चिंतन ढाबों में तब्दील किया जा रहा है।

3. **ज्ञान मुक्ति मंच**

शिक्षा के निजीकरण और ज्ञान पर पूँजीपतियों के कब्ज़े के खिलाफ यह एक अभियान है। इस अभियान का मुख्य औजार युवा ज्ञान शिविर है। शिक्षा, कम्प्यूटर, साइंस, लोकविद्या, उद्योग, मीडिया, बाजार और कम्पनियों तथा सरकार सबके बीच सम्बन्धों पर चर्चा और नौजवानों के लिये दूरगामी रास्तों पर चर्चा यही इन शिविरों के मुख्य विषय है। आश्रम पर, चिंतन ढाबे पर और गाँवों में ये शिविर आयोजित होते रहते हैं।

4. **ज्ञान संवाद**

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर तथा इंटरनेट के माध्यम से आश्रम सामाजिक सरोकार रखने वाले बुद्धिजीवियों के बीच लोकविद्या दृष्टिकोण से एक ज्ञान संवाद चलता रहता है।

5. **प्रकाशन**

लोकविद्या संवाद और ज्ञान की राजनीति पुस्तकमाला आश्रम के अभी तक के प्रमुख प्रकाशन हैं। अंग्रेजी में Knowledge in Society के नाम से व्यापक भागीदारी पर आधारित पुस्तिकायें प्रकाशित की गई हैं। इनके अलावा विभिन्न कार्यक्रमों में पर्चे प्रकाशित किये जाते है।